Mausam

POETRY CONTRIBUTIONS UNDER SANKALP

“आज का प्रयास”

प्रयास हमारा खुशमय जीवन हो आपका
ध्येय हमारा गरिमामयी जीवन हो आपका।
झुके ना कभी, मुड़े ना कभी
सेहत भरी मुस्कान चाहें हम सभी ।।
नए विचार, नए “संकल्प” लेकर
समय का सदुपयोग करें हम सभी।
साल से पहले, भरें सब पेपर
“भविष्य” में जरूर जाकर देखें हम सभी ।।
पैसा सेहत, समय का सदुपयोग
आज ही पाए हैं विचार, करें उपयोग ।।
सेहत भरे, स्वद के वचन,
“सी जी एच एस” संग सेहत के भरे रंग ।।
जीवन बढ़े, प्यार के संग
समस्या ना हो कोई, बढ़े हमारी उमंग।
मधुरवाणी संग प्रयास जारी है,
ज्ञान का Lesson जो आज मिला है।
“Will” जरूर कर जाएंगे हम,
मरने के बाद भी जी पाएंगे हम।
पैसे का उपयोग ब्याज संग पाएं,
अच्छे ब्याज संग दिवाली मनाएं।
सादा जीवन उच्च विचार,
“खुश रहे” प्यार भरा हमारा पेंशन परिवार ।

डा. शारदा वर्मा
निदेशक सी.जी.एच.एस.
23.12.2014

ज़िदगी में ना जाने कौन सी बात आखिरी होगी
ना जाने कौन सी रात आखिरी होगी
मिलते जुलते बातें करते रहो यारों एक दूसरे से
ना जाने कौन सी मुलाकात आखिरी होगी

श्री प्रेम कुमार
वरिष्ठ परामर्शदाता
पेंशन एवं पेंशनभोगी कल्याण विभाग

अजनबी शहर है दोस्त बनाते रहिए
इस ज़माने में ज़माने के रस्मात निभाते रहिए
शिकवे लाख सही खत्म न कीजिए रिश्ते
दिल मिले न मिले हाथ मिलाते रहिए

श्री प्रेम कुमार
वरिष्ठ परामर्शदाता
पेंशन एवं पेंशनभोगी कल्याण विभाग

उलझा रहा अजीब सी दुनिया की दौड़ में
जीता ही रहा अभी तक अपने काम-ओ-ख्यालों में
पाया है इस समाज से मैंने भी बहुत कुछ
लेता रहा समाज से हर वक्त कुछ न कुछ
पर ख्याल मेरे दिल में हर वक्त ये रहा
क्या कभी दे पाउंगा कुछ मैं भी समाज को
ये सोचते हुए एक ख्वाइश है अभी जगी
इस जिंदगानी में कुछ मैं भी दे सकूं समाज को
" संकल्प " ने दिखाया है नया रास्ता मुझे
कुछ नया करने का हौसला दिया है संकल्प ने मुझे।

श्री प्रेम कुमार
वरिष्ठ परामर्शदाता
पैंशन एवं पैंशनभोगी कल्याण विभाग

“सच्चाई”

रोज होता हूi, मुखातिब तुमसे,
जानता हूi, इक रोज़ लेने आओगी।
चाहता था मैं, किसी दूसरे को,
जाते जाते, उसको बहुत रूलाओगी।
जानता हूi, इक रोज़.....
ख्वामखाह, अब ये रोज का झगड़ा,
अब अकेले, बिन तेरे वक्त नहीं कटता।
दूरियां उनसे बहुत, अब बढ़ने लगीं,
नज़दीकियां, तेरे आगोश में ही भूल पायेगी।
जानता हूi, इक रोज़.....

सांसे मेरी अपनी, कितनी बाकी हैं,
मयख़ाने की शाम, आखिरी चंद बाकी हैं।
बिन साकी के ही, रात ढलने को है,
नई सुबह से पहले, ज़रूर तुम तो आओगी।
जानता हूi, इक रोज़.....

श्री सुनील मोहन मैहता
डी आई जी, बी एस एफ, जम्मू

“एक साथ”

जियेंगे, मरेंगे, रहेंगे, एक साथ,

दुश्मनों का सामना करेंगे एक साथ।

ना आंधी, ना तूफां, ना सर्दी-गर्मी का होगा अहसास,

जब हम सबके मिलेंगे हाथों में हाथ।

जियेंगे मरेंगे रहेंगे एक साथ.....

फौलाद सा सीना लिए, दोस्ती का पैगाम लिए,

कदम से कदम मिलाकर, आगे बढ़ेंगे एक साथ,

जियेंगे मरेंगे रहेंगे एक साथ.....

बोलेंगे राम-राम, वाणयाक्कम, आदाब और सौनिहाल,

हम त्यौहार पर गले मिलेंगे,

बांटेंगे मिठाईयां और खुशियां एक साथ,

पिता, भाई और दोस्त इसी घर में हैं, हम सब,

हर सुख, हर दुख में रहेंगे एक साथ।

जियेंगे मरेंगे रहेंगे एक साथ.....

श्री सुनील मोहन मैहता

डी आई जी, बी एस एफ, जम्मू